

अथ भौमादीनां वक्रोदयादिदिक्कालप्रकारः—

वक्रोदयादिदिक्कालांशकतोऽधिकाल्पाः

केन्द्रांशकाः क्षितिस्तुताद्दिग्गुणास्त्रिभक्ताः।

साङ्कांशकादशाहताङ्गहताः कुम्भका-

वक्राद्यमादादिवर्षैः क्रमशो गतैव्यम् ॥

अन्वयः— वक्रोदयादिदिक्कालांशकतः केन्द्रांशकाः अधि-

काल्पाः क्षितिस्तुतात् दिग्गुणाः त्रिभक्ताः साङ्कांशकाः दशाहताङ्गहताः कुम्भकाः, आदादिवर्षैः क्रमशः वक्राद्यं गतैव्यम् ।

वरा— वक्रोदयादिदिक्कालांशकतः वक्रोदयास्तमार्गेषु गदिक्कालांशकतः उक्तकेन्द्रांशतः केन्द्रांशकाः अधिकाङ्गणाः स्युः । तदा क्षितिस्तुतात् कुजात् क्रमेण दिग्गुणाः द्विसङ्ख्या गुणिताः त्रिभक्ताः त्रिभिर्गणिताः, साङ्कांशकाः स्वकीयनवमांशेन सहिताः, दशाहताङ्गहताः दशाहताः षड्भक्ताः, कुम्भकाः स्वैव गणिताः पूर्ववत् स्थापितैव्याशयः, एव क्रमेण आदादिवर्षैः समुपलब्धदिवर्षैः, क्रमशः वक्राद्यं गतैव्यं कथितकेन्द्रांशेन्यस्य क्रमेण इत्येकेन्द्रांशा अधिकाश्चैतदा वक्राद्यं गतैव्यम्, अल्पाश्चोद्भव्यं ज्ञेयमिति विवेकः ।

भाषार्थः— मंगल आदि ग्रहों की वक्र-उदय-अस्त मार्ग गति के जो द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश कहे गये हैं, उनसे यदि अपने इष्ट शीघ्रकेन्द्र का अंश अधिक हो अथवा कम हो, तो उन दोनों को आपस में घटाकर क्रम से मंगल के अंशों में 2 से गुणा करें। बुध के अंशों में 3 का भाग दें। गुरु के अंशों में उस अन्तर का ही 4वाँ भाग जोड़ दें। शुक के अंशों में 5 से गुणा करके 6 का भाग दें और शनि के अंशों में 7 का भाग दें। अर्थात् उतना ही रहने दें। फिर सब ग्रहों की पूर्वोक्त क्रियाओं द्वारा जो अंक प्राप्त हों, उनके दिन समझें और उपर्युक्त शीघ्रकेन्द्र के अंश यदि अधिक हों, तो वक्र-उदय-अस्त मार्ग गति होकर लब्ध के अन्वयदिन व्यतीत हुए हैं— ऐसा समझें और यदि उक्त शीघ्रकेन्द्र के अंशों से अपने इष्ट शीघ्रकेन्द्र के अंश कम हों तो वक्र-उदय-अस्त-मार्ग इनके होने से आज से उतने दिन शीघ्र हैं, जिसे अंक उपर लब्धकाय प्राप्त हुए हैं।

ग्रहणाद्यम्

शास्त्री-III

09-10-20

1

अथ भौमादीनामुदयस्तधीयकेन्द्रांशः—

क्षितिजोऽवटयमरुदेति पूर्व गुरुरिन्द्रैः सप्तचन्द्रैः।

स्वस्वौदयभागसंविहीनेर्भागान्शैरपरज ग्रान्ति चास्तम् ॥

अन्वयः— क्षितिजः अवटयमैः, गुरु इन्द्रैः, रविजः तु सप्त-
चन्द्रैः पूर्वे उदेति, च स्वस्वौदयभागसंवि हीनेः भागान्शैः अप-
रज अस्तं प्रयान्ति ।

नारा- क्षितिजः कुजः, अवटयमैः अवटविंशतिमितैः, गुरुः
वृहस्पतिः, इन्द्रैः चतुर्दशभिः, रविजः शनिः तु, सप्तचन्द्रैः सप्त-
दशभिश्चालकेन्द्रांशैः, पूर्वे प्राच्यां दिशि, उदेति । च तथा, स्व-
स्वौदयभागसंविहीनेः भागान्शैः अपरज पश्चिमाभां दिशि,
अस्तं प्रयान्तीति ।

त्राषार्थः— द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अवयव यदि 27 अंश
हों तो मंगल, इन्द्र 98 अंश हों तो गुरु, सप्तचन्द्र 96 अंश हों
तो शनि— ये सब पूर्वदिशा में अस्त होते हैं और अपने
अपने उदय के अंशों को भाग समझें। इनकी 360 में से
क्रमशः घटाने पर जो शेष अंश रहे, उतने यदि शीघ्रकेन्द्र के
अंश हों, तो क्रम से मंगल, गुरु, शनि पश्चिम में अस्त होते हैं।
अर्थात् द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के 332 अंश हों तो मंगल, 386
अंश हों तो गुरु और 383 अंश हों, तो शनि— ये सब पश्चिम
में अस्त होते हैं।

डॉ० सुदिवट कुमार

सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)

2030 सं० महावि० सुखसैना

पूर्णिमा ।

अथ बुधशुक्रयो रुद्रयास्तशीघ्रकेन्द्रांशः -

खशरेश्च जिनेः परे जन्मवो -

रुद्रयोऽस्तोऽक्षदिनेर्नगाग्निभूमिः ।

उदयोऽक्षनयेऽग्रहीन्दुभिः प्रा -

ग्नुयो दिग्दहनेऽथ षट्सुरैः स्यात् ॥

अन्वयः - खशरैः जिनेः परे जन्मवोः उदयः च अक्षदिनेः

नगाग्निभूमिः अस्तः स्यात्, अक्षनयेः ग्रहीन्दुभिः प्राक्

उदयः दिग्दहनेः षट्सुरैः अस्तः ।

तारा - खशरैः पञ्चशता, जिनेः चतुर्विंशतभिः, परे पश्चिमायां दिशि, जन्मवोः बुधशुक्रयोः, उदयः भवति । च तथा, अक्षदिनेः १५५, नगाग्निभूमिः १६६ परे पश्चिमायां दिशि, अस्तः स्यात्, तथा अक्षनयेः २०५, ग्रहीन्दुभिः १८३, प्राक् पूर्वस्यां दिशि उदयः, दिग्दहनेः ३१०, षट्सुरैः ३३६ केन्द्रांशैः, प्राक् पूर्वे, स्व, अस्तः स्यात् ।

भाषार्थः - द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के खशर ५०, जिन २४ अंश हो, तो पश्चिम दिशा में क्रमशः बुध और शुक्र का उदय होगा है । द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश क्रम से अक्षदि १५५, नगाग्नि १६६ अंश हो, तो बुध और शुक्र का पश्चिम में अस्त होगा और द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश क्रम से अक्षनय २०५, ग्रहीन्दु १८३ अंश हो, तो बुध और शुक्र का पूर्व दिशा में उदय होगा है । यदि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के अंश क्रम से दिग्दहन ३१०, षट्सुर ३३६ अंश हो तो बुध और शुक्र का पूर्व दिशा में अस्त होगा है ।

डॉ० सुद्विपट कुमार

सहा० प्राध्याप (ज्योतिष)

२०३० संमहावि सुखसेना,

पुणे ।